प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **दीप्ती दूबे** शोध छात्रा हिन्दी विभाग, गाँधी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, समोधपुर, जौनपुर (सम्बद्ध- वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर) ने अपना शोध-प्रबन्ध **''महादेवी वर्मा के गीत काव्य का शिल्प-वैशिष्ट्य''** शोध मेरे निर्देशन में विश्वविद्यालय के नियमानुसार पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोधकार्य इनके व्यक्तिगत अनुशीलन एवं परिश्रम पर आधारित है तथा पूर्णतया मौलिक है।

मैं इनके उज्ज्वल एवं प्रगतिशील भविष्य की कामना करता हूँ।

शोध निर्देशक :

डॉ० के०एन० सिंह
रीडर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
गाँधी स्मारक पी०जी० कालेज
समोधपुर, जौनपुर

डॉ० राज किशोर सिंह
प्राचार्य
गाँधी स्मारक पी०जी० कालेज
समोधपुर, जौनपुर

आचार्य
गां० स्मा० पोस्ट ग्रेजुएट कालेज
समोधपुर-जौनपुर

विषयानुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	I-IV
आभार	I-II
अध्याय प्रथम	1-55
महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व, कृति एवं विचार। व्यक्तित्वच-वाह्यवम्तित्व एवं आन्तरिक व्यक्तित्व। रचना-संसार, विचार। काव्य कृतियों के मूल स्वर-वेदन एवं करूणा। करूणा में सर्वशक्तिमती तथा कल्याण-विधात्री सत्ता की खोज।	
अध्याय द्वितीय	56-78
महादेवी वर्मा की काव्य-कृतियों का भाव-लोक	
अध्याय तृतीय	79-107
महादेवी वर्मा के गीतों का मूल्यांकन-गीत का स्वरूप एवं गीत काव्य में महादेवी का स्थान- आत्ममिव्यंजकता-रागात्मकता-काल्पनिकता-संगीतात्मकता-भावगत एकरूपता आकारगत लघुता-शैलीगत सुकुमारता।	
अध्याय चतुर्थ	108-124
महादेवी वर्मा के काव्य की भाषा।	

विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
अध्याय पंचम्	125–146
महादेवी वर्मा की काव्य कृतियों में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण देशज एवं संस्कृत निष्ठ शब्दावली के मणिकांचन प्रयोग में उभरता अर्थ-सौन्दर्य तथा उसका भाषा के स्तर पर विवेचना।	
अध्याय षष्ठ	147–165
महादेवी के काव्य की शिल्पगत विशेषता	
अध्याय सप्तम्	166–171
समग्र मूल्यांकन एवं उपलब्धियों पर विचार	

प्राक्कथन

महादेवी वर्मा के गीतिकाव्य की वस्तु और कलागत उपलब्धियों पर युगपद् रूपसे दृष्टि रखतें हुए कह सकते हैं कि युग प्रवर्तक साहित्यकार की भाँति उनके काव्य में उनकी भावना, ज्ञान और कर्म एक ही सम पर अद्‌भुत रूप से समन्वित है। उनका काव्य विश्व मात्र के लिए अशेष स्नेह की स्वीकृति है। जिस प्रकार काव्य का सृजन एक महती किन्तु मधुर वेदना के फलस्वरूप होता है, ठीक उसी प्रकार उनके काव्य का आत्म पक्ष भी विश्व वेदनामय एवं अनुभूतिप्रवण है। सच्चे कलाकार की तरह उनके काव्य में लोक हृदय की सच्ची परख भी है और इसे अपने में बाँध लेने की अशेष क्षमता भी। जीवन की निगाढ़ वेदना से सिक्त होने के कारण उनके गीत अपने संप्रभाव में आह्लादक एवं श्रुति मधुर है। करूणा तथा वेदना के प्रति परिबद्धता उनके व्यक्तित्व एवं काव्य का निरन्तर बौद्धि-आभार नहीं प्रत्युत उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति और संस्कारों का प्रतिफलन है। इसी के फलस्वरूप उनकी वेदना अपने उत्कृष्ट रूप में एवं कला के श्रेष्ठ उपकरणों के साथ व्यक्त भी हो सकी है। वेदना की साधना और उनकी ही सिद्धि में रत रहने के कारण उनकी जीवन दृष्टि और सौन्दर्य-बोध भी उन्नत, समृद्ध तथा व्यापक है।

आपकी रचनाओं में एक ओर मानिनी राधा की विरह-व्यथा और ऐकान्तिक साधना का वैष्णव भक्तिवाद है तो दूसरी ओर विरह में ही चिर रहने का अद्वैतमूलक आत्मशक्ति का गौरव भी। आप करूणा

की अभिनव वाहक कवयित्री तो हैं किन्तु आपकी करूणा समग्र मानव समाज के प्रति निवेदित है, उसमें आत्म करूणा या ग्लानि का संस्पर्श नहीं। अपनी रचनाओं में समष्टि और व्यष्टि का जिस कलात्मकता के साथ आपने समन्वय किया है वह आपकी अक्षय कीर्ति का स्मारक है। यह तथ्य इस बात का भी प्रमाण है कि लेखक वस्तुतः एक सामाजिक प्राणी होता है और उसकी सारी साधना और रचना-प्रक्रिया समाज के साथ एकीकरण में ही निहित होता है। यदि कविता व्यष्टि-सीमित जीवन को समष्टि व्यापक जीवन तक फैलाने के लिए ही व्यापक सत्य को अपनी परिधि में बाँधती है तो यह उक्ति महादेवी जी के काव्य पर पूरी तरह से चरितार्थ होती है।

महादेवी जी ने अद्वैतवाद का गहन अध्ययन-चिंतन-मनन किया है। अतएव उसका प्रभाव उनके काव्य पर पड़ना स्वाभाविक है किन्तु अपने रचना-क्षणों में आप साम्प्रदायिक या मान्य सिद्धान्तों से ऊपर उठकर अपनी सम्पूर्ण संवेदना शक्ति के साथ जीवन और काव्य में अद्वैत रूप से मिल जाती है। अतएव आपके कृतित्व में न तो कोई शास्त्रीय दर्शन आ सका है और न रहस्यवाद का परम्परा-स्वीकृत रूप। मानवीय जीवन की समग्र चेतना और अनुभूति को वैभव के साथ अंगीकृत करने के कारण स्वाभाविक रूप से वेदना के प्रति अपराजित निष्ठा आपके जीवनदर्शन का सुदृढ़ स्तम्भ बना है। वेदना के द्वारा ही परम सत्य के शोध आपके अन्तर्जगत का सत्य एवं काव्य का साध्य है। यह अपनी एकता में असीमित है। शोध का साधन है चिर सम्पन्न प्रकृति जो अपनी अनेकता में अनन्तरूपा है। इस प्रकार वस्तु और कला दोनों ही दृष्टियों से आपका काव्य एकनिष्ठ होते हुए भी स्वाभाविक रूप से 'असीम' और 'अनन्त' से युक्त हो गया है। सच्चे अर्थों में आपके गीत दूसरों का इतिहास न कहकर आपके ही जीवन के सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था विशेष को ध्वनित

करने में सक्षम हैं। अतएव उनकी मार्मिकता विस्मय की वस्तु बन गई है। गिने चुने शब्दों में प्रस्तुत, वास्तविकता के रंगों से रंजित और जीवन-संगीत की सुरीली लयों से गुंजित अपकी रचनायें कल्पना, सौन्दर्य और अनुभूति की पूर्णतम् अभिव्यक्ति की प्रतीक हैं। वर्तमान अध्ययन में श्रीमती महादेवी वर्मा के गीत काव्य का शिल्प-वैशिष्ट्य अध्ययन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन-सौविध्य की दृष्टि से वर्तमान अध्ययन को सात अध्यायों में विभाजित कर पूर्ण किया गया है। यथा-

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत- महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व, कृति एवं विचार

(अ) व्यक्तित्व

क- वाह्य व्यक्तित्व

ख- आन्तरिक व्यक्तित्व

ग- रचना-संसार

घ- विचार

(ब) काव्य कृतियों के मूल स्वर

क- वेदना

ख- करूणा

ग- करूणा में सर्वशक्तिमती तथा कल्याण विधात्री सत्ता की खोज

द्वितीय अध्याय में-

महादेवी वर्मा की काव्य कृतियों का भाव-लोक

तृतीय अध्याय में-

महादेवी वर्मा के गीतों का मूल्यांकन- गीत का स्वरूप एवं गीतिकाव्य में महादेवी का स्थान-

क- आत्माभिव्यंजकता

ख- रागात्मकता

ग- काल्पनिकता

घ- संगीतात्मकता

ङ- भावगत एक रूपता

च- आकारगत लघुता

छ- शैलीगत सुकुमारता

चतुर्थ अध्याय में-

महादेवी के काव्य की भाषा

पंचम् अध्याय में-

महादेवी वर्मा की काव्य कृतियों में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण देशज एवं संस्कृत निष्ठ शब्दावली के मणिकांचन प्रयोग में उभरता अर्थ-सौन्दर्य तथा उसका भाषा के स्तर पर विवेचना।

षष्ठ अध्याय में-

महादेवी के काव्य की शिल्पगत विशेषता

सप्तम् अध्याय में-

समग्र मूल्यांकन एवं उपलब्धियों पर विचार प्रस्तुत किया गया है। शोध-प्रबन्ध के अन्त में शोध में सहायक ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गयी है।

दीमी दूबे

दीमी दूबे

आभार

मैं अपने आराध्य ''देवी दुर्गा माँ भगवती'' के प्रति आज शोध-प्रबन्ध के पूर्णता के अवसर पर श्रद्धा सुमन समर्पित करती हुई नतमस्तक हूँ, जिनकी महती कृपा ही आज फलीभूत हुई हैं। माँ काली की अनुकम्पा, गुरूजनों के मार्गदर्शन सहृदयजनों के आशीर्वाद एवं सहयोगियों के सहयोग से शोध-प्रबन्ध अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सकी हूँ, आप सबके प्रति आभार ज्ञापित करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती हूँ।

इस शोध-प्रबन्ध को मैं अपने निर्देशक परमपूज्य डॉ० के०एन० सिंह (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गाँधी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, समोधपुर, जौनपुर) के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपनी कृपा व स्नेह का पात्र समझकर इस शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण में मेरा सहयोग किया है।

मैं श्रद्धेय गुरूवर डा० अवधेश सिंह (पूर्व प्राचार्य, गाँधी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, समोधपुर, जौनपुर) व डा० राजकिशोर सिंह प्राचार्य, गाँधी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, समोधपुर, जौनपुर के प्रति अत्यन्त आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं सद्परामर्श ही मेरा सम्बल रहा है।

मैं अपने परम्पूज्य पितामह स्व० श्री अवधनारायण दूबे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं पूज्यनीया पितामही स्व० श्रीमती इसराज़ी देवी एवं पूज्य पिता श्री करमचन्द दूबे, अधिवक्ता एवं पूर्व उप जिला शासकीय अधिवक्ता शाहगंज, जौनपुर एवं पूज्यनीया माता श्रीमती राजकुमारी दूबे एवं भ्रातागण डॉ० अशोक कुमार दूबे एम.बी.बी.एस,

एम.डी (मानसिक रोग विशेषज्ञ) एवं श्री अरविन्द कुमार दूबे अधिवक्ता एवं विपेन्द्र कुमार दूबे सहायक इन्जीनियर गाजियाबाद के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनका आशीर्वाद ही आज फलीभूत हुआ है।

मैं आभारी हूँ अपनी बड़ी बहनों श्रीमती उषा पाण्डेय, श्रीमती किरन पाण्डेय, श्रीमती नीता दूबे एवं श्रीमती रीता दूबे एम०बी०बी०एस० के प्रति जो शोधपथ पर सफल क्रियान्वयन हेतु सदैव मेरा मार्ग प्रशस्त करती रही। मैं अपने जीजागण सर्वश्री शत्रुघ्न प्रसाद पाण्डेय (युवा कल्याण अधिकारी रायबरेली), प्रो० डा० उमाशंकर पाण्डेय, डायरेक्टर विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन, कृष्णकान्त दूबे प्रबन्धक जमसेदपुर टाटा, एवं डा० शैलेश चन्द दूबे एम०बी०बी०एस०, डी०सी०एच० के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनका स्नेहिल आशीर्वाद ही आज फलीीूत हुआ है।

मैं आभारी हूँ अपनी भाभियों श्रीमती गायत्री दूबे एवं संगीता दूबे के प्रति निके गृहस्थ कार्यों के दायित्वों के अधिक्येन निर्वाह से मुझे शोध-प्रबन्ध लेखन में सहायता एवं निश्चिन्तता प्राप्त हुई। मैं अपने पारिवारिक बाल वृन्द आनन्द छात्र बी०टेक (आई०टी० नोयडा), अनुराग अभिनव एवं अभिषेक (भतीजे) एवं भतीजी रूचिक तथा रक्तनिका के प्रति भी स्नेह ज्ञापित करती हूँ।

मैं आभार प्रकट करना चाहती हूँ श्री विनयशंकर मिश्र जी, ''मिश्रा फोटो स्टेट'' नखास, ओलन्दगंज, जौनपुर का जिनके सहयोग द्वारा मेरे शोध कार्य को अन्तिम स्वरूप मिल पाया।

गुण-दोष तो सर्वत्र सम्भव है इस शोध-प्रबन्ध में भी अनेक दोष एवं त्रुटियाँ एवं कुछ गुण हो सकते हैं। आशा है कि विद्वत्गण मेरे दोषों को क्षमा करेंगे।

दीप्ती दूबे

दीप्ती दूबे